INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

D.P. Bhosale College, Koregaon

Tal. Koregaon, Dist. Satara (MS), INDIA
(Affiliated to Shivaji University, Kolhapur)
NAAC Re-accredited 'A' Grade (CGPA 3.12)
ISO 9001:2015 Certified

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

March -2019 Special Issue – 171 (D)

रयत शिक्षण संस्थेचे,

डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव

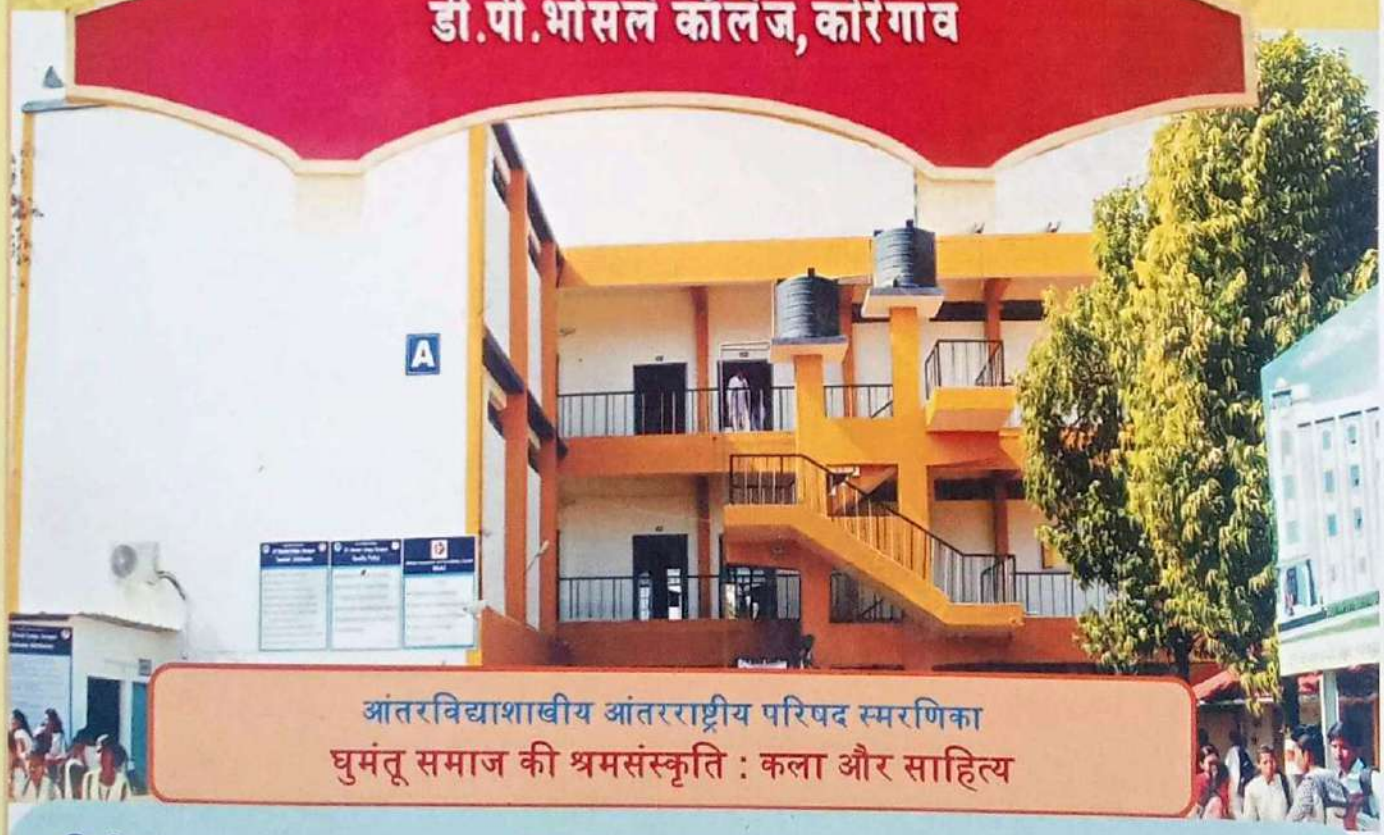

आंतरविद्याशाखीय आंतरराष्ट्रीय परिषद स्मरणिका

घुमंतू समाज की श्रमसंस्कृति : कला और साहित्य

अतिथी संपादक
डॉ. विजयसिंह सावंत
प्राचार्य
डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव
ता.कोरेगाव, जि. सातारा

कार्यकारी संपादक
डॉ. गजानन भोसले
प्रमुख, हिंदी विभाग
डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव
ता. कोरेगाव, जि. सातारा

सहयोगी संपादक
श्रीमती आर. के. मुल्ला
सहाय्यक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग
डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव
ता. कोरेगाव, जि. सातारा

मुख्य संपादक
डॉ. धनराज धनगर (येवला)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.261 **ISSN – 2348-7143**

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

April -2019 Special Issue – 171 (D)

अतिथी संपादक
डॉ. विजयसिंह सावंत
प्राचार्य,
डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव
ता.कोरेगाव, जि. सातारा

कार्यकारी संपादक
डॉ. गजानन भोसले
प्रमुख, हिंदी विभाग,
डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव
ता. कोरेगाव, जि. सातारा

सहयोगी संपादक
श्रीमती आर. के. मुल्ला
सहाय्यक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग,
डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव
ता. कोरेगाव, जि. सातारा

मुख्य संपादक
डॉ. धनराज धनगर **(येवला)**

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 800/-

Published by –
© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik
Email : swatidhanrajs@gmail.com **Website :** www.researchjourney.net **Mobile :** 9665398258

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक / लेखिका	पृष्ठ क्र.
1	घुमंतू घिसाडी समाज का स्वरूप एवं वास्तव	डॉ.भानुदास आगेडकर	06
2	बंजारा समाज की संस्कृति एवं व्यवसाय का परिचय	डॉ. मेदिनी अंजनीकर	12
3	घुमंतू समाज की बोली भाषा	डॉ. बी.एस. बलवंत	15
4	वंचित आबेडकरवादी साहित्य अब वैश्विक परिदृश्य में	डॉ.गोरख बनसोडे	18
5	'छोरा कोल्हाटी का' में स्त्री शोषण कि भयानकता	महेश भोपळे	21
6	घुमंतू समाज का परिचय तथा महाराष्ट्र के घुमंतू समाज के साहित्य का स्वरूप	डॉ.जी.एस.भोसले	24
7	पारधी समाज : जात पंचायत	प्रा.एम.व्ही.वर्णेकर	27
8	घुमंतू धनगर जनजाति के अंतरंग	डॉ. संगिता चित्रकोटी	30
9	बिना चेहरे के लोग में चित्रित घुमंतू जन-जातियो की कथा-व्यथा	डॉ. नितीन धवडे	33
10	घुमंतू जन – जातियों का चित्रण सुषमा मुनींद्र की कहानी 'देवता' के संदर्भ में	कु.अलका घोडके	36
11	आदिवासी पीड़ा की सशक्त अभिव्यक्ति : निर्मला पुतुल की कविताएँ	डॉ.कामायनी सुर्वे	39
12	वंचीतो के साहित्य में चित्रित वेदना	सचिन जाधव	44
13	वंचित एवं घुमंतू आदिवासी जनजाति का साहित्य : एक विवेचन	श्री. सूर्यकांत आमलापुरे	47
14	घुमंतू समाज के साहित्य का स्वरूप	डॉ कविता पनिया	51
15	घुमंतू बंजारा जाति का स्वरूप एवं उनकी पहचान	प्रा. नीलम भोसले	53
16	घुमंतू जनजातियाँ अपनी नयी रोशनी की तलाश में	डॉ.सिंदू हालदे	58
17	जातपंचायत में गावपंचायत – घुमक्कड समाज की त्रासदी	डॉ. एच.डी.टोंगारे, सतीशकुमार पडोळकर	60
18	रांगेय राघव के 'कब तक पुकारू' उपन्यास में करनट जाति के शोषण का चित्रण	प्रा.जे.ए. पाटील	63
19	बंजारा समाज की बोली भाषा का स्वरूप	डॉ. अनिता काकडे	68
20	घुमंतू समाज में कोल्हाटी समाज	डॉ. दिलीपकुमार कसबे	72
21	रामनाथ चव्हाण के 'बिन चेहरे के इन्सान' कहानी संग्रह में चित्रित घुमंतू समाज की समस्याएँ	डॉ. एच.व्ही. काटे	76
22	बंजारा एवं पारधी : परिवर्तन के संकेत	डॉ.भारत खिलारे	81
23	भारतीय समाज का सबसे वंचित समाज : किसान	प्रा.मारुफ मुजावर	87
24	घुमंतू चित्रकथी समाज का सांस्कृतिक जीवन	श्रीमती. आर. के मुल्ला	90
25	हिंदी कहानी साहित्य में वंचित समाज का चित्रण	प्रा.पी. आर.रगडे	94
26	बंजारा समाज की गुप्त भाषागत शब्दावली : एक अध्ययन	डॉ.सुभाष राठोड	99
27	घुमंतू समाज की बोली भाषा	डॉ.संग्राम शिंदे	103
28	वंचित अवाम की बुलंद आवाज : जयभारत –जयभीम	डॉ.सय्यद शौकतअली	107
29	घुमंतू समाज की कलाओं के प्रकार और स्वरूप	श्री.अंकुश शेलार	110
30	घुमंतू समाज का व्यवसायानुसार वर्गीकरण	डॉ.बाजीराव शेलार	114
31	घुमंतू समाज का स्वरूप और उनके व्यवसाय	डॉ. महिपती शिवदास	118

32	घुमंतू समाज का व्यवसाय के अनुसार वर्गीकरण तथा व्यवसाय का स्वरूप	सुरेखा मंगलगी	123
33	घुमंतू समाज की बोली भाषा तथा सांकेतिक भाषा	डॉ. वंदन जाधव	130
34	घुमंतू जनजातियों की श्रम संस्कृति	व्यंकट बा. धारासुरे	134
35	घुमंतू समाज का व्यवसाय अनुसार वर्गीकरण	प्रा. किसन वाघमोडे	139
36	घुमंतू 'वड्डर' समाज की श्रम संस्कृति और 'तोडती पत्थर' कविता	डॉ.प्रतिभा येरेकार	143
37	घुमंतू जनजातियों में कोरकू समाज का आर्थिक जीवन	प्रा. एस. डी. कोरेबोईनवाड	146
38	घुमंतू समाज में कोरकू जनजाति की सांस्कृतिक नृत्यकला	प्रा. सुधाकर वाघमारे	151
39	हिंदी दलित काव्य में चित्रित वंचितों की पीडा	डॉ. सविता निंबाळकर	156
40	डोंबारी समाज कि संस्कृति एवं व्यवसाय का परिचय	श्रीमती. आर. के. मुल्ला	159

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 171(D) घुमंतू समाज की श्रमसंस्कृति : कला और साहित्य
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
April-2019

डोंबारी समाज की संस्कृति एवं व्यवसाय का परिचय

श्रीमती मुल्ला आर. के.
सहा. प्राध्यापक
हिंदी विभाग
डी.पी.भोसले कॉलेज कोरेगाव

पृष्ठभूमि

घुमंतू श्रमिक जनजातियों का समाज है। हमारे भारतीय समाज में ऐसी अनेक जनजातियॉ हैं ; न उनका कोई शाश्वत पता है न कोई अपना स्वतंत्र अस्तित्व। यह घूमंतु समाज गॉव के बाहर, समाज से दूर,निरंतर पेट के लिए संघर्षरत रहनेवाला यह समाज सबसे वंचित रहा है। न रहने के लिए इसे शाश्वत जगह मिली न घर ,न इसका कहीं नाम है, न इसकी कोई पहचान, न इसे कोई शिक्षा मिली न इसका विकास हुआ और आज तक न उसे अधिकार मिला न सम्मान। सदियों से यह समाज दूसरों का मुँहताज रहा है। अपनी आजीविका चलाने के लिए मेहनत और करतब करता रहा, अपनी कलाबाजी से दूसरों को हॅसाता रहा और उनका मनोरंजन करता रहा है। दूसरों की दिये हुए टूटपूंजी दान पर जीता रहा है। कितनी विडम्बना की बात है कि हम सब भारतीय हैं, ऐसा घोषित करते हैं, भारत मेरा देश है ऐसी प्रतिज्ञा करते हैं पर सच बात तो यह है कि इस कृषिप्रधान देश में इस घूमंतू समाज की न किसी ने परवाह की न इनके अधिकार के लिए किसी ने प्रयास किया है; बल्कि हम ने उसे विशिष्ट जनजाति के रूप में नाम दे दिया। आज तक भारतीय संविधान में भी इसका नाम दर्ज नहीं है। आज भी यह समाज मेहनत करने पर भी मूलभूत सुख सुविधाओं से वंचित है;विपन्नावस्था में ही जीवन जीता रहा है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र के माध्यम से ऐसे ही एक जनजाति डोम्बारी का यथासंभव परिचय देने का प्रयास रहा है, जिससे हमें इनके जीवन की वास्तविक की अनुभूति हो जाएगी।

विषय प्रवेश

हिंदी शब्दकोश में कलाबाज का अर्थ है डोंबारी, तमासगीर, नट, मांगगारूडी। दूसरा अर्थ है करतब, कलाबाजी, करनेवाला, क्रिया करनेवाला, कसरत करने, रस्सी पर चलने आदि खेल तमाशों का प्रदर्शन करके लोगों का मनोरंजन करनेवाला व्यक्ति, कलापूर्ण ढंग से अद्‌भूत खेल खिलानेवाला व्यक्ति और कलाबाजी का अर्थ है किसी कलाबाज की कोई क्रिया या खेल, सिर नीचे और पैर ऊपर करके उलट जाना। मदारी का अर्थ है कोल्हाटी,डोंबारी दरवेशी,माकडवाला और फुनट का अर्थ है डोंब, डोंबारी। डोंबारी यह एक घुमंतू समाज है; जो सदियों से अपनी कसरत एवं कलाबाजी से खेल के विविध प्रकार करते हुए लोंगो का मनोरंजन करता है। डोंबरीयों का मूल निवास स्थान गुजरात है, किंतु वे उदरनिर्वाह हेतु महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, राजस्थान और आंध्रप्रदेश आदि विभिन्न राज्यों में दिखाई देते हैं। अब महाराष्ट्र में सातारा, सांगली, अहमदनगर, बार्शी और पुना में कुछ डोंबरी रहते हैं। उत्तरप्रदेश और गुजरात में इन्हे नट के रूप में पहचाना जाता हैं

शिक्षा का अभाव

यह समाज गॉव–गॉव घूमते रहने से और कलाबाजी के खेल छोटे बालकों पर निर्भर होने से इनमें शिक्षा का औसत कम होता है। इनकी संतान कम से कम चौथी कक्षा तक ही पढ़ पाती है। इस समाज में स्त्री शिक्षा तो न के बराबर है। बड़ी मुश्किल से एक या दूसरी स्त्री अपने हस्ताक्षर कर पाती है।

डोंबरी समाज का सांस्कृतिक जीवन

वेशभूषा

गुजराती होने पर भी इनका पहनावा मराठा समाज जैसा है। पुरूष लोग कुर्ता, धोती, पगडी और टोपी पहनते हैं; तो स्त्रियाँ साडी और चोली पहनती है। करतब दिखानेवाली स्त्री ऑखो में काजल लगाती है और बालों की चोटी बनाती है।

भाषा इनकी मातृभाषा गुजराती है और संपर्कभाषा हिंदी तथा मराठी है। घूमंतू समाज होने से इनकी बोली भाषा में अन्य भाषा का प्रभाव दिखाई देता है।

धर्म

धर्म से डोंबारी समाज हिंदू है। 'कान्होबा' इनकी कुलदेवता है। अपने कुलदेवता के लिए व्रत उपवास तथा मन्नते मनाते है। साथ ही वे विभिन्न देवी–देवताओं की आराधना करते हैं। अंबामाता के दर्शन के लिए तीर्थक्षेत्र चले जाते हैं। गणेशोत्सव, दिपावली और होली आदि त्यौहार मनाये जाते हैं। डोंबरी समाज में 'तामसा' यह पारंपारिक नाच–गाना स्त्री–पुरूष करते हैं।

डोंबारी समाज में कई अंधश्रद्धाएँ प्रचलित हैं। आषाढ़ मास में देवी मरिआई के नाम पर भेड़ की बलि दी जाती है। यदि ऐसा नहीं किया तो मरिआई देवी का कोप हो जाएगा; इसप्रकार की आशंका निर्माण होने पर लोग ऋण लेकर यह कार्य करते। शिक्षा एवं प्रबोधन के अभाव के कारण इस समााज में अंधश्रद्धाएँ प्रचलित हैं।

विवाह पद्धति

डोंबारी समाज में मामा या बुआ की बेटी साथ विवाह किया जाता है। अधिककांश विवाह युवावस्था में होते हैं। एक ही नाम होनेवाले के साथ रिश्ता नहीं होता है। इनके नाम लाखे, जौडे,आनदकर,मोरकर, धावडे आदि होते हैं। विवाह की विधि और भोजन की व्यवस्था लड़की के घर की जाती है। पहले हल्दी की रस्म इनमें पाँच दिन तक चलती थी। इनमें ब्राह्मण को ही विवाह विधि करने का रिवाज है। इस समाज में तलाक का रिवाज नहीं है। यदि पति को पत्नी पसंद नहीं है तो पंचायत की अनुमति लेकर शादी का खर्चा पिता को देकर उसकी बेटी लौटायी जाती है। इनमें बहुपत्नीत्व की परंपरा रही है। पति यदि दूसरा विवाह करना चाहता है तो उसे पत्नी की अनुमति लेनी होती है, तभी वह दूसरा विवाह कर सकता है।

व्यवसाय का स्वरूप

इनका मुख्य व्यवसाय कलाबाजी और कसरत है। यह इनका पारंपरिक व्यवसाय है। स्त्री–पुरूष, बच्चे मिलकर अपने इस मेहनत के खेल से लोगों का मनोरंजन करते है माहौल बनाने के लिए वे पहले खेल की शुरूवात ढ़ोल बजाकर करते हैं। ढ़ोल बनजे पर वे सिर नीचे करते हुए अपने दोनों हाथ जमीन पर टेकते हुए और दोनों पैर ऊपर करते हुए छलांग लगाते हैं। इसे हिंदी मेंडसंपार्श्विक कूद और मराठी में कोलांटी उडी मारणे कहा जाता है। अकलाबाजी, कसरत और करतब कर लोगों का मनोरंजन करना इनके आजीविका का साधन रहा है। इसमें विशेषत: स्त्री और बच्चों का खेल मुख्य आर्कषण का केंद्र होता है। अपने हाथों में रिंग लेकर रबर की भाँति इसमें से निकल जाते हैं। यह नजारा बडा चित्ताकर्षक होता है। यह करतब बच्चों को बचपन से ही सी खायी जाती है। यह शिक्षा बच्चों दो या तीन महिने की अवस्था में ही दी जाती है; ताकि उनका शरीर बचपन से ही लचकदार बन जाए । बालक कुछ वर्ष का होने पर कई प्रकार की कसरत कर सकता है।

डोंबारी समाज में कसरत के कई भेद होते हैं। एक छोटी–सी तख्ती पर बोतल रखकर चलना। विशाल लोहे की छड़ को बिना हाथ लगाये गले तक ले जाकर मोड़ देना। ऊँचे पेड पर से बच्चे को झूलाना या ऊँचाई पर जाकर पेड़ से बच्चे को छोड़कर झोली में झेलना। रस्सी पर से छलांग लगाना। ऊँचाई तक जाकर दूर तक छलांग लगाना। ऊँचाई से दूर तक छलांग लगाना । ऊँचाई पर जाकर एक ही बाँस की लंबी लकड़ी (बड़ा डंडा, लट्ठ) ठहरकर दूर–दूर तक तांगे जैसा टाँगे रखते हुए चलना। माथे पर कपडा बाँधकर उस पर खप्पर रखकर गुलेल से ऊँचाई पर पत्थर फेंक कर वह माथे से झेलते हुए खप्पर को फोड देना। खप्पर फोडते समय बराबर झेल माथे पर लिया जाता है। इससे कहीं खरोंच या मार नहीं लगती। यह कसरत वैसे देखा जाए तो खतरनाक होती है। छोटे बच्चे को हवा में उछालना, हथेली पर लाठी ठहराकर उसपर बच्चे को तरंगते हुए रखना। दातों से बड़ा बोझ उठाना। बालों से बैलगाडी खींचना। छोटी–सी गोल लोहे की कड़ी से स्त्री–पुरूष दोनो एक साथ बाहर निकलना। उस कड़ी को आग लगाकर उसमें से कूदना और भिन्न – भिन्न प्रकार की छलांग लगाना।

इनके कलाबाजी का दूसरा आर्कषण है, खेमे (डेरा, मराठी में तंबू) से तार बाँधकर हाथ में डंडा लिये तार पर से चलना। चलते समय यह तार शरीर के बोझ से बार–बार तार हिलने लगती है, तब ऐसा प्रतीत होता है कि कहीं नीचे गिर न जाए, पर इस समय स्त्री अपना संतुलन डंडे के सहारे बनाए रखने की कोशिश करती है। दर्शकों के लिए यह दृश्य आर्कर्षित करनेवाला होता है।

इसतरह से डोंबारी समाज के लोग अपनी आजीविका चलाने के लिए ऐसे खतरनाक कलाबाजी अपनी जान की बाजी लगाकर करते हैं। मनोरंजन तो वे लोगों का करते हैं पर; कुछ लोग ही करूणावश दान के रूप में कुछ पैसे देते हैं। इतने कम पैसों से इनका गुजारा न होने से वे फुटकर जैसे व्यवसाय करते है। जैसे;गाय–भैंस की सिंग से कंगवा बनाना और अपनी हस्तकला से सुंदर वस्तु बनाकर बेचना।

डोंबारी समाज में जातपंचायत का महत्व

जात पंचायत डोंबारी समाज पर जात पंचायत का प्रभाव अधिक दिखाई देता है। इस पंचायत का प्रमुख पाटील होता है। यह सर्वज्ञानी, समझदार और निःपक्ष के रूप में पहचाना जाता है। हर जगह का पाटील अलग होता है। यह पाटील डोंबरी समाज में होनेवाली सामाजिक समस्याओं तथा वादविवादों पर हल निकाल कर न्यायाधिश की भूमिका निभाते हैं। इस समाज में पाटील का सम्मान रहता है। इनके द्वारा दिये हुए फैसले सबको स्वीकार्य होते हैं। जब कोई पुरूष इस समाज की स्त्री को भगाकर ले जाता है तब पंचायत इसे बडा अपराध समझती है; इसे अपने प्रतिष्ठा का प्रश्न समझती है। और अपराधी को पकड कर लाने का आदेश देती है। अपराधी गुनाह कबूल होने तक उसे रस्सी से पेड़ के साथ बाँधकर सोटे से पीटते हैं। गुनाह कबूल होने पर उसके द्वारा पंचायत का जुर्माना लिया जाता है। और उनकी जाति की परंपरा के अनुसार उसे देवता के आगे लाया जाता है और उसे चांवल खाने के लिए दिये जाते हैं। यदि वह गुनहगार होगा तो उसके मुँह से खून निकलता है ऐसे इस समाज की धारणा है। यदि कोई अपराध इनसे नहीं संभल सकेगा ऐसा इन्हें प्रतीत हुआ तो पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज कर दी जाती है।

निष्कर्षत:

यह कहा जा सकता है कि आज भी घुमंतू समाज डोंबारी की संस्कृति एवं व्यवसायिक स्वरूप जैसे की तैसे है। शिक्षा का अभाव, अज्ञान,अंधश्रद्धाओं तथा गरीबी के कारण इस समाज की उन्नति नहीं हो सकी। इसतरह प्रस्तुत शोध प्रपत्र के माध्यम से इस डोंबारी समाज के यथार्थ को चित्रित करने का प्रयास रहा है।

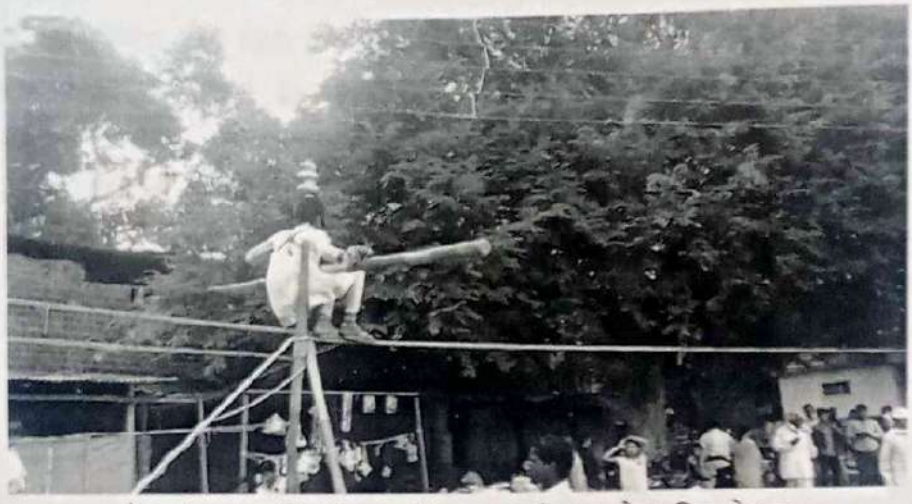

डोम्बारी जनजाति की लड़की कलाबाजी का खेल दिखाते हुए

संदर्भ संकेत –

1- https//bh.wikipedia.org/wiki/?kqearw lekt
2- http//sandipdake.blogspot.com/2017/10/Dombari-a-life-with-a-journey.html
3- shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/93498/8/08_chapter%202.pdf/
4- उपलानी भटक्यांचे उपरे जीवन – भीमराव व्यंकप्पा चव्हाण
5- दै. फारवर्ड प्रेस– ६ दिसंबर २०१८
6- इंटरनेट, गूगल